शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

धर्म प्रेरणा का स्रोत

विनोबा

मानव को प्रेरणा उसके मन से मिलती है। लेकिन मन केवल व्यक्तिगत यानी निजी नहीं होता। बल्कि सारे समाज का भी एक सामूहिक मन होता है। वह सामूहिक मन दिन-ब-दिन बदलता रहता है। हर एक देश में यह बदला हुआ है। उस-उस जमाने में उस-उस समाज का मन एक तरह से काम करता था। आज विज्ञान के जमाने में दुनिया के समाचार एक जगह बैठकर हम नित्य जान सकते हैं। पुराने जमाने में ये सब साधन नहीं थे। फिर भी सारी पृथ्वी पर जहां-जहां मानव फैला हुआ है, करीब-करीब एक ही तरीके से मानव का मन काम करता रहा।

हम ढाई हजार साल पहले का जमाना लें, तो हमें मालूम होगा कि उस समय भारत में वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म की विचारधाराएं चलती थीं। समाज में खाने-पीने जैसी मामूली बातें तो चलती ही थीं, परंतु एक प्रेरणा ऐसी काम कर हरी थी, जिसका मूलरूप भगवान बुद्ध और महावीर बने। उन्होंने धर्म-संस्थापना की। उसी समय चीन में भी लाओत्से, कन्फ्यूशियस आदि 'ताओ' के बारे में विचार करते थे, जिससे वहां भी धर्म-संस्थापना हुई। यानी वहां के लोगों को उससमय वैसी ही भूख लगी थी, यद्यपि चीन और हिंदुस्तान एक-दूसरे के बारे में बहुत कम जानते थे। उसी जमाने में ईरान और फिलिस्तीन में हमें उसी प्रकार की प्रेरणा का दर्शन मिलता है। ईरान में जरथ्रुश्त को और मिस्र में मूसा और फिलिस्तीन में ईसा को हम देखते हैं, जिन्होंने पारसी, यहूदी, ईसाई आदि धर्मों की स्थापना की। यानी उन पांच सौ साल के अंदर दुनिया के सभी देशों में धर्म-संस्थापना का कार्य होता दिखाई देता है।

आखिर सभी मानवों को धर्म-संस्थापना की प्रेरणा कैसे मिली ? इसका जवाब यही हो सकता है कि व्यक्ति के मन की तरह समाज के मन को भी परमेश्वर से प्रेरणा मिलती है। जब मूसा काम कर रहे होंगे, तब उन्हें मालूम भी नहीं होगा कि दूसरी तरफ लाओत्से काम कर रहे हैं। फिर भी एक अव्यक्त हवा-सी फैल जाती थी, जिसका कारण एक सर्वांतर्यामी सर्वप्रेरक परमेश्वर ही हो सकता है। हिंदुस्तान की विशिष्ट मनोरचना को दृष्टि में रखकर सोचें तो ध्यान में आयेगा कि यदि राजनीति को धर्म की नींव नहीं रही तो वह उन्मत्त तो होगी ही, बल्कि असफल भी होगी। धर्मवृत्ति भारतीय मन की विशेषता है। यह भारतीय मन कम-से-कम दस हजार वर्षों के पूर्वेतिहास से बना है, इसलिए उसमें फरक करना संभव नहीं है और इष्ट भी नहीं। भारतीय संस्कृति ने धर्म के साम्राज्य के नीचे व्यवहार को आजादी दी हुई है। यह धार्मिक मनोवृत्ति हिंदुस्तान में वेदोपनषिद काल से आज तक कमबेशी मात्रा में सर्वत्र व्यवहार में है। ऐसी ऐतिहासिक परंपरा का उल्लंघन करने वाली राजनीति सफल होना संभव ही नहीं है।

- हिंदूधर्म का तत्व मैत्री 12 नवंबर 2015